वर्षः 3। पत्रिका अंकः 2 | **पाँचवाँ संस्करण** | जनवरी 2022

मुश्किलें हज़ारों आएँ, उमंग में ना कमी लाएँ...

कोविड–19 ने हमारी और हमारे बच्चों की जिंदगी में उथल–पुथल मचा दी है। लॉकडाउन, स्कूलों का बंद होना और शारीरिक दूरी–इन सबका बच्चों पर गहरा असर पड़ रहा है। कोविड काल में बच्चों की शिक्षा सर्वाधिक प्रभावित हुई है। चार घंटे की लगातार ऑनलाइन पढ़ाई के साथ–साथ गृहकार्य का भार चुनौतीपूर्ण रहा। घर बैठे, स्मार्ट फोन के सामने एक के बाद एक चार विषयों की पढ़ाई करना छोटे बच्चों के लिए आसान नहीं रहा। इस महामारी ने बच्चों की खुशहाल जिंदगी को कष्टदायक बना दिया है, उनका जीवन पूरी तरह बदल गया है। पहले जहां बच्चे घर पर आकर होमवर्क करते थे, अब उनकी जिंदगी घर तक ही सिमट कर रह गई है। कोविड की दूसरी लहर के बाद आशा की एक किरण दिखाई दी। बच्चे अपने बस्ते सँभालते हुए स्कूल जाते हुए दिखने शुरू हुए थे, लेकिन यह खुशियां भी ज्यादा दिन नहीं टिकीं, कोविड की तीसरी लहर अब फिर से अपनी आंखें दिखा रही है, सुनहरे दिन लौट कर आए तो थे मगर कोविड के काले बादलों ने फिर से इस उजाले भरे दिन को घेरना शुरू कर दिया है।

इसी दौरान कुछ किशोरियों की शादी कर दी गयी तो, कुछ अभिभावकों ने यह सोचना भी शुरू कर दिया था कि आगे अपने बच्चों को स्कूल न भेजें। इसके बाद भी एक सकारात्मक प्रक्रिया जो बनी रही वो यह कि किशोरियों के साथ कोविड के दौरान भी छोटे–छोटे समूहों में उमंग के पाठ्यक्रम पर सत्र लिए जा रहे थे।

इस कारण कोरोना के चुनौती पूर्ण समय में भी किशोरियों की जीवन शैली में बहुत बदलाव आया है। हालाँकि अब फिर से कोविड की तीसरी लहर ने हमें और सभी बच्चों को गहरी सोच में डाल दिया है, फिर भी पिछले लॉकडाउन के दौरान किए गए उमंग के सत्र, शिक्षा से जुड़े रहने के नए माध्यमों (Digi SATH) और उनसे मिली सफलता हमें कोविड के साथ शिक्षा और सशक्तीकरण की इस लड़ाई को फिर से लड़ने की हिम्मत दे रही है। सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार, उमंग के अंतर्गत अपने छोटे समूह से लेकर बड़े समूह में किशोरियों के साथ सत्र की शुरुआत की गई। इस विषम परिस्थिति में तीसरी लहर के कारण जब स्कूल फिर से बंद हो गए हैं और किशोरियां फिर से अपने घरों में वापस चली गयी हैं। उमंग सत्र में किशोरियां खुल कर भाग ले रही हैं। कोविड के दौरान झारखण्ड शिक्षा परिषद के द्वारा राज्य स्तर पर एक कमिटी का गठन किया गया जिसमें आई.सी.आर.डब्ल्यू. (ICRW) भी एक सदस्य है। इसके माध्यम से हमने बच्चों तक अपनी पहुँच बनानी शुरू की है। Digi SATH के माध्यम से जेम्स कॉमिक के कुछ ऑडियो–वीडियो भी बच्चों तक पहुंचाने की कोशिश की गई।

जिसको लगभग 15 लाख बच्चों और 1 लाख 18 हजार शिक्षकों ने देखा है।

उमंग ग्रुप की एक किशोरी अर्चना के अनुसार,'लॉक डाउन के समय हम किशोरियों पर बहुत असर हुआ है, पढ़ाई से वंचित हुए और गृहकार्यों के बोझ से दब गए। जैसे ही उमंग का सत्र शुरू हुआ, हम सभी किशोरियों को बाहर आने का मौका मिला, और अपनी सहेलियों के साथ बात करने का मौका मिला।

कोविड की दूसरी लहर के बाद, जैसे स्थिति सामान्य होने लगी, शिक्षकों की तरफ से भी प्रशिक्षण की मांग आने लगी। जे.ई.पी.सी. ने उमंग और जेम्स प्रोग्राम को गोड्डा एवं जामताड़ा में लागू करने की अनुमति दे दी, इन परियोजनाओं के तहत शिक्षकों की मांग को देखते हुए ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। ऑनलाइन प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों की ओर से व्यक्तिगत प्रशिक्षण आयोजित करने की बात कही गई। अतः शिक्षकों के साथ व्यक्तिगत प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। उनके उत्साह को देखते हुए, उमंग के सत्र स्कूल में भी शुरू किए गए।

उमंग की नोडल शिक्षक मोनिका का कहना है, "उमंग का सत्र हमारे अन्दर नव–विचार का बीज बोते हैं। इस से मेरे अन्दर आत्मविश्वास आया है, मैं बहुत ही उत्साह के साथ उमंग प्रशिक्षण में भाग लेती हूँ और बच्चों के साथ सत्र को संचालित करती हूँ। इस प्रशिक्षण को पा कर मुझे बहुत लाभ मिला।''

> **"कोविड महामारी के दौरान शिक्षा जारी रख पाना जरूर एक चुनौती रही पर इस अनुभव ने बहुत कुछ सिखाया भी। विभाग ने भी DigiSATH और DigiSchool जैसे कदम उठाए और आज भी यह कोशिश जारी है कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे शिक्षा से जुड़ाव बनाए रखें।"**
>
> **किरण कुमारी पासी (IAS),**
> **राज्य परियोजना निदेशक,**
> **झारखंड शिक्षा परियोजना, रांची**

अपने आप को कोविड से सुरक्षित रखें, इन चार चीजों का हमेशा ध्यान रखें

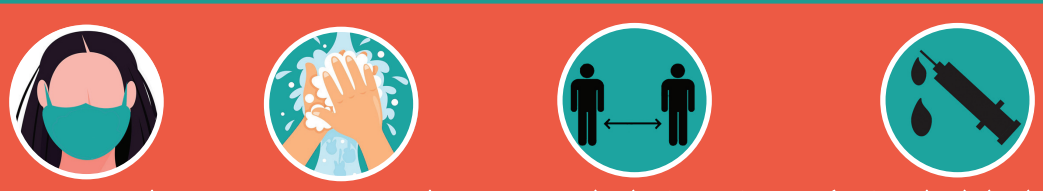

प्रिय मित्रो,

उमंगवाणी के 5वें संस्करण को आपके साथ साझा करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हमें उम्मीद है कि आने वाले दिन बेहतर होंगे और महामारी की चुनौतियों के बावजूद, हमने इनसे सीखा है और ऐसी स्थितियों से निबटने के लिए हम बेहतर रूप से तैयार हैं।

इस महामारी, इसके परिणामस्वरूप स्कूल बंद होने और समुदाय आधारित समूह शिक्षा गतिविधियों के आंशिक रूप से बंद होने से बच्चों की शिक्षा पर भारी असर पड़ा। किशोर–किशोरियों के लिए स्कूल छोड़ने, अनौपचारिक मजदूरी, रोजगार और बाल–विवाह में धकेले जाने के जोखिम बढ़ गए। इसलिए, हमारे लिए ऐसी रणनीतियों को अपनाना महत्वपूर्ण था जो किशोरों की मदद कर सकें और जिन्हें यथाशीघ्र लागू किया जा सके।

इस महामारी ने मानवीय संपर्क को बहुत हद तक प्रतिबंधित किया, जिसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा, हालांकि, इसने हमें जुड़े रहने के वैकल्पिक तरीकों का पता लगाने के लिए भी प्रेरित किया। नई सूचना प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमने''व्हाट्सएप'', ''माइक्रोसॉफ्ट टीम्स'' और ''जूम'' जैसे नए फोन और कंप्यूटर–आधारित प्लेटफॉर्मों का उपयोग सीखा। हमने इनका उपयोग एक दूसरे से जुड़े रहने, बैठक आयोजित करने, प्रशिक्षण और सामूहिक चर्चा के लिए किया। ये फील्ड की स्थिति के बारे में सीखने और सामूहिक रूप से विचार–विमर्श करने में भी मददगार हैं, जो हमारी भविष्य की रणनीति बनाने में उपयोगी हैं। इसने सहयोग के नए अवसर भी प्रदान किए। हमने विद्यार्थियों के लिए डिजिटल शिक्षण सामग्री विकसित करके Digi SATH के ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म के साथ जुड़ने के लिए झारखंड सरकार के साथ भागीदारी की। इनमें लैंगिक समानता पर आधारित कुछ कहानियों को एनीमेशन के माध्यम से ऑडियो विजुअल रूप प्रदान किया गया। इन कहानियों को किशोरों द्वारा घर, स्कूल और समुदाय में उनके अनुभव के आधार पर विकसित किया गया था। हमने समुदाय को कोविड के समुचित व्यवहार, रोकथाम की रणनीतियों और टीकाकरण के महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए रेडियो की पहुँच का भी इस्तेमाल किया। हमने इन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए 9 रेडियो स्पॉट विकसित किए जो रेडियो सिटी एफएम और ऑल इंडिया रेडियो पर प्रसारित किए गए।

किशोरों और उनके परिवारों को और अधिक नुकसान से बचाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने का निर्णय लिया गया। पहली बार हेड–मास्टर्स का ओरिएंटेशन (अभिमुखीकरण) डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से आयोजित किया गया। लड़कियों के सीखने की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए, छोटे समूहों में सामुदायिक स्तर की सामूहिक शिक्षा–गतिविधियों को कोविड संबंधी सावधानियों का पालन करते हुए शुरू किया गया। लड़कियों के लिए निरंतर शिक्षा के विषय पर नुक्कड़ नाटक गतिविधि शुरू की गई। इन गतिविधियों को जमीन पर सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। लड़कियों की शिक्षा का समर्थन करने वाले परिवारों के सार्वजनिक सम्मान ने कई और माता–पिताओं को प्रेरित किया। कई उत्साही माता–पिताओं ने अपनी बेटियों की शिक्षा का समर्थन करने का संकल्प लिया। हालाँकि कठिन समय अभी भी खत्म नहीं हुआ था, कोविड की तीसरी लहर फिर से अपनी आंखें दिखा रही है, और इसीलिए इस कठिन समय में हमारा काम और भी महत्वपूर्ण हो गया है। हमें शिक्षकों और स्कूलों के साथ जुड़ाव जारी रखना चाहिए। सामुदायिक स्तर पर सभी कोविड नियमों का पालन करते हुए छोटे–छोटे ग्रुप में सामूहिक शिक्षा गतिविधियों को स्वयं सहायता समूहों के साथ मजबूत और महत्वपूर्ण तरीके से जारी रखनी चाहिए।

हमने यह भी सीखा है कि आगे चलकर तकनीकी का कैसे सदुपयोग करना है, लेकिन इसका उपयोग आमने–सामने वाली गतिविधियों के साथ करना चाहिए। *उमंगवाणी* का यह अंक पाठकों को इसकी झलक प्रदान करेगा कि हमने पिछले छह महीनों में यह सब कैसे किया, हमारी सफलताएं और सीखे गए सबक क्या रहे। मुझे आशा है कि आपको इस अंक को पढ़कर अच्छा लगेगा।

अमाजित मुखर्जी
डायरेक्टर ऑफ ऑपरेशन्स, ICRW

अब उमंग... रेडियो संग

व्यावहारिक परिवर्तन में एक व्यक्ति के अपने दृष्टिकोण, उसके समाज और विभिन्न संचार माध्यमों की एक अहम भूमिका रहती है, चाहे वह टेलीविजन हो, रेडियो या फिर नए माध्यम जैसे कि एफ एम। एक ऐसा समय था जब हमें सभी सूचनाएँ सिर्फ रेडियो से ही प्राप्त होती थीं, चाहे वह देश की आजादी की खबर हो या भारत की पहली बार क्रिकेट विश्व कप में जीत। धीरे–धीरे वह जगह टेलीविजन ने ले ली है, लेकिन अभी भी, खास कर के ग्रामीण क्षेत्रों में रेडियो, संचार का एक अहम माध्यम है, और शहरी क्षेत्रों में एफ एम रेडियो अभी भी अपना परचम लहरा रहा है। बाकी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के साथ, एफ एम रेडियो के संचालक जो ''आर जे'' नाम से मशहूर हैं, उनकी लोकप्रियता किसी फिल्मी कलाकार से कम नहीं है।

आप सोच रहे होंगे आज हम आपको रेडियो के बारे में इतनी बातें क्यों बता रहे हैं! असल में जब इस साल कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के दौरान, उमंग कार्यक्रम को अपने नुक्कड़ नाटक गतिविधि को बीच में ही रोकना पड़ा, तब हम ने रेडियो जैसे वैकल्पिक संचार माध्यमों के बारे में सोचना शुरू किया, और तीस दिन तक चलने वाले एक अनोखे रेडियो कार्यक्रम ने जन्म लिया। इसमें हमने इस समय के लिए सबसे उपयोगी विषय, कोविड संक्रमण के सुरक्षा विषयों पर कुछ रेडियो स्पॉट बनाए, जिसमें कोविड से बचाव और कोविड वैक्सीन के सम्बन्ध में जानकारी दी गई।

इसी के साथ उमंग कार्यक्रम ने अपना पहला जन–संचार कार्यक्रम ऑल इंडिया रेडियो और रेडियो सिटी 91.1 एफ एम चैनल के साथ शुरू किया, जिसमें कुल 9 रेडियो स्पॉट्स दिन में लगभग 20 बार आल इंडिया रेडियो के भागलपुर सेंटर, और रांची और जमशेदपुर शहरों के रेडियो सिटी एफ एम के माध्यम से प्रसारित किए गए। यह कार्यक्रम लगातार 31 दिनों तक चला, जिसमें कोविड वैक्सीन तथा सही तरीके से मास्क पहनना और हाथों की साफ–सफाई के बारे में रोचक और रचनात्मक शैली में विस्तार पूर्वक बताया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा उन मुद्दों को सामने लाया गया, जो ज्यादातर दूसरे जनसम्पर्क माध्यमों में नहीं बताएं गए, जैसे मास्क कब और कैसे पहनना चाहिए, हाथ साबुन से कितनी देर तक और कैसे धोना चाहिए, तथा वैक्सीन के साइड इफ़ेक्ट और वैक्सीन के दोनों डोज लेना क्यों ज़रूरी हैं, इत्यादि। रेडियो एफ एम ने अपने कार्यक्रम के इतने अच्छे फीडबैक पाए कि उन्होंने उमंग कार्यक्रम की प्रधान डॉ. नसरीन जमाल को अपने स्टूडियो में आमंत्रित किया और मशहूर आर. जे. अमन और श्रुति ने उनके लाइव साक्षात्कार प्रसारित किए, जिसमें डॉ. नसरीन ने उमंग परियोजना के लक्ष्य और उसकी गतिविधियों के बारे में श्रोताओं को विस्तारपूर्वक बताया। साथ ही कोविड पर चलाए जाने वाले इस अनोखे रेडियो कार्यक्रम की रूपरेखा को भी साझा किया।

उमंग चीफ ऑफ प्रोजेक्ट डॉ. नसरीन जमाल रेडियो सिटी एफ. एम. के जमशेदपुर और रांची स्टूडियो में आर जे अमन और आर जे श्रुति के साथ

इस पूरे रेडियो अभियान के तहत उमंग ने लगभग एक करोड़ श्रोताओं के पास कोविड संबंधी इन अहम जानकारियों को पहुंचाया।

आगे भी उमंग परियोजना के तहत ऐसे ही रेडियो कार्यक्रम करने की योजना है, जिसमें हम कोविड के साथ–साथ किशोरी सशक्तीकरण, बाल–विवाह की रोकथाम और किशोरी शिक्षा पर आधारित विशेष कार्यक्रम को रेडियो के जरिए लोगों तक पहुंचाएंगे।

विशेष सूचना :

कोविड की दूसरे लहर के कारण आकस्मिक बंद हुए उमंग नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम नवंबर 2021 की 28 तारीख से पुनः शुरू हो गए और कुल 76 नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन करते हुए दिसंबर की 14 तारीख को सफलतापूर्वक संपन्न हुए। इस दौरान कुल 3 नुक्कड़ नाटक टीमों ने जामताड़ा के 30 गाँवों और गोड्डा के कुल 32 गाँवों में अपने प्रदर्शन किए। जिसमें लगभग 11000 ग्रामीणों ने भाग लिया और 2200 किशोरियों के उन अभिभावकों को सम्मानित किया गया जिन्होंने अपनी बेटियों की उच्च शिक्षा को सुनिश्चित किया। कार्यक्रम के दौरान 76 ग्रामीणों ने शपथपत्र हस्ताक्षर करते हुए अपनी बेटियों की पढ़ाई को जारी रखने का शपथ भी लिया।

उमंग कार्यक्रम के तहत स्कूल शिक्षकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें जामताड़ा एवं गोड्डा के 160 शिक्षकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण बताते हुए शिक्षकों ने अपना अनुभव उमंगवाणी के साथ साझा किया.....

हरी प्रसाद ठाकुर (BEO महागमा, गोड्डा)
''हमलोगों ने समाज में बहुत से भेदभाव देखे हैं, जैसे लड़कों को अच्छा खाना दिया जाता है और लड़कियों को नहीं। लेकिन अब हम सभी शिक्षक स्कूल में इस कार्यक्रम को चला कर सभी को समान रूप से प्रेरित करेंगे।''

''जेम्स ट्रेनिंग में बताई गइ बातों को हम अपने विद्यालय में लागू करने की कोशिश में लगे हैं। बीते दिनों हमने सामूहिक खेल का भी आयोजन किया था। पहले हमे थोड़ा असहज महसूस होता था पर अब हमारे पास एक सहारा है कि हमने परियोजना के माध्यम से जेंडर समानता पर आयोजित ट्रेनिंग ली है और प्रशासनिक सहयोग से यह ट्रेनिंग हुई। अगर अन्य शिक्षकों को भी यह ट्रेनिंग मिलती तो कार्यक्रम का और बेहतरीन संचालन होगा।'' **कुमुदनी रूपा टुडू (नोडल शिक्षिका, RK +2 हाईस्कूल)**

विवेक कुमार चौधरी (HS सैदापुर, गोड्डा)
''हमलोग स्कूल में छोटे–छोटे कार्यक्रम करा कर लड़का–लड़की को एक साथ लाने की कोशिश करेंगे तभी धीरे–धीरे एक साथ मे बैठेंगे।''

''हम लोगो में काफी परिवर्तन हुआ है। हम अब सुबह अपने परिवार के काम में हाथ बटाते हैं। इससे देख रहे हैं कि मिल कर काम करने से दोनों को ही फायदा होता है। दोनों ही आराम महसूस करते हैं। मेरी पत्नी ने भी दिए गए पाठ्यक्रम को पढ़ा और उसे काफी गर्व महसूस हुआ कि मैं इस मुहिम में शामिल हूँ। विद्यालय में मैंने काम के बँटवारे एवं बच्चों को साथ बैठाने का काम शुरू कर दिया है। कुछ बाधाएं आएंगी पर आप सभी के सहयोग से उन पर काबू पा लिया जाएगा।'' **तपन कुमार मंडल (नोडल शिक्षक, UMS बांका)**

नितीश वर्मा (UPG Gov- HS आदर्श बांका, गोड्डा)
''माहवारी को लेकर हमलोगों को थोड़ा–थोड़ा प्रार्थना के समय में बताना चाहिए तभी बच्चों की झिझक खत्म होगी! बच्चे बताएँगे भी।''

''हम अपने विद्यालय में जेंडर समानता लाने के लिए नितांत प्रयासरत है। जेम्स कार्यक्रम एवं इसमें दी गई ट्रेनिंग जमीनी स्तर पर मुद्दे को लागू करने में अचूक हथियार साबित होगी ये मेरा मानना है। मैं काफी उत्साहित हूँ कि मेरे पीछे कोई खड़ा है। इससे मेरे आत्मविश्वास को बल मिलता है एवं हमारे प्रयासों को एक गति मिलेगी।''
दीनबंधु दास (प्राचार्य, प्रोजेक्ट. 2 विद्यालय चैनपुर, जामताड़ा)

मुझे अभी और पढ़ना है....

"लॉकडाउन के दौरान मेरी पढ़ाई पूरी तरह बाधित हो गई थी। मैं पढ़ाई में ध्यान भी नहीं लगा पाती थी। सुबह से घर के काम में व्यस्त हो जाती थी, जैसे घर की साफ–सफाई, बर्तन धोना, खाना बनाना और जानवरों की देखभाल। किसी तरह रात के समय 2–3 घंटे पढ़ाई कर पाती थी। स्कूल बंद होने के कारण किसी सहेली से बात या मुलाकात नहीं हो पा रही थी। पढ़ाई के बारे में किसी प्रकार की चर्चा भी किसी से नहीं होने के कारण धीरे–धीरे पढ़ाई में मन लगना कम होता जा रहा था। साथ ही डर भी लग रहा था कि पता नहीं स्कूल खुलेगा भी या नहीं और कहीं मेरी पढ़ाई छूट ही न जाये। फिर एक दिन मैंने माता–पिता को आपस में बात करते सुना कि यदि स्कूल और कुछ दिन नहीं खुला तो वे एक लड़का देख कर मेरी शादी करवा देंगे। ऐसा सुनकर मुझे और डर लगने लगा, क्योंकि मैं अभी शादी नहीं करना चाहती थी और आगे पढ़ना चाहती थी।

बीच–बीच में उमंग की दीदी लोग आकर हमसे बातचीत और चर्चा जरूर करती थीं, लेकिन मेरे मन में डर था कि अगर इस बीच मेरे मम्मी–पापा जो सोच रहे हैं कहीं वह सच न हो जाए। मेरे पास खुद का फोन नहीं था, इसलिए ऑनलाइन क्लास चल तो रही थी, लेकिन मैं उसमें सही तरीके से जुड़ नहीं पा रही थी। न जाने क्यों एक अनजाना डर मुझे हमेशा सताता रहता था। एक दिन घर में कुछ बुजुर्ग लोग मम्मी–पापा से मिलने आए। मम्मी ने मुझे भी उनसे मिलवाया। बातें क्या हुईं, वह तो पता नहीं लेकिन डर ने मुझे और जकड़ लिया। कहीं वह लड़के वाले तो नहीं! मुझे अभी भी याद है, वह रविवार का दिन था, पापा–मम्मी आंगन में बैठे थे, मैं उमंग के सत्र से लौट ही रही थी, पता नहीं क्या हुआ। सोचा अगर आज भी चुप रही तो कहीं देर न हो जाए। मैं पापा और मम्मी के पास गई और उनसे कहा, "मैं अभी शादी नहीं करना चाहती हूँ। पापा, मुझे अभी और पढ़ना है।'' पापा ने मम्मी की तरफ देखा और मुझसे कुछ कहने ही वाले थे कि मैंने फिर से हिम्मत जुटाई और कहा, ''पापा क्या आप नहीं चाहते कि आपकी बेटी पढ़–लिख कर कोई बड़ी ऑफिसर बने? क्या आप चाहते हैं कि इतने दिन मैंने जो पढ़ाई–लिखाई की, स्कूल गई यह सब बेकार हो जाए? पापा आपको मालूम है न, मैं हमेशा क्लास में अच्छे नंबर लाती हूँ। शादी तो बाद में भी हो सकती है न?'' पता नहीं उस दिन यह हिम्मत मेरे अंदर कहाँ से आ गई थी। मेरी बात सुनकर पापा ने कुछ न कहा और वहां से चले गए, मम्मी भी मुझे ही डांटने लगी, ''पापा के सामने तो तू ऐसे कभी नहीं बोलती थी!''

उस दिन के बाद घर में मुझे मेरी शादी को लेकर कोई बात तो नहीं सुनाई दी, लेकिन मन में एक डर बना रहता था। मैं बार–बार उमंग दीदी से पूछा करती, क्या स्कूल खुलने की कोई खबर नहीं है? मैं यह सोच कर उदास रहने लगी कि यदि स्कूल नहीं खुला तो मेरी बी.ए. तक की पढ़ाई कैसे पूरी होगी, और अगर स्कूल खुलने में और देर हुई, तब मैं अपनी शादी कैसे रोकूंगी? मैं सब से पूछती रहती थी कि स्कूल कब खुलेंगें। इस दौरान उमंग सत्र ही एक ऐसी जगह थी जहाँ मैं उमंग दीदी और बाकी लोगों से मन की बात कह पाती थी। फिर एक दिन आखिर स्कूल खुलने की खबर आई। मेरे सपनों को जैसे फिर से उड़ान मिली। अभी भी याद है, मैंने उस दिन दौड़ कर घर जा कर माँ से कहा था, "मैं अभी शादी नहीं करूँगी माँ, स्कूल खुलने वाले हैं, मुझे अभी और पढ़ना है और आगे बढ़ना है।" उस दिन मेरी खुशी देखकर मम्मी भी हँसने लगी। स्कूल फिर से खुल गए, और मैं पहले की तरह रोज स्कूल जाने लगी, सहेलियों से बातें करने लगी, पढ़ाई करने लगी, खेलने लगी, सपने देखने लगी और सबसे बड़ी बात, अब मैं बहुत खुश रहने लगी। अब मेरा पढ़ाई में फिर से मन लगने लगा है, कोई भी दिक्कत होती है तो टीचर से तुरंत पूछ लेती हूँ और अब माँ भी हमेशा घर का काम करने के लिए नहीं कहती हैं। और घर में मेरी शादी की भी कोई बातचीत नहीं होती।

और हाँ, एक राज की बात बताऊँ? पहले दिन मेरे पापा ने ही मुझे स्कूल छोड़ा, अपने साइकिल से। हाँ, अब फिर से स्कूल बंद हो गई है, लेकिन मेरे सपने देखने की आदत अभी भी जारी है और साथ में जारी है पढ़ने के लिए लड़ाई करने की हिम्मत.. आखिर लहरों से जूझकर ही तो किनारा मिलता है... मैं तैयार हूँ।"

संगीता मरांडी
उम्रः 15, कक्षाः 9
गाँवः पाकुड़िया (नाला)

सुशीला की कहानी

"मैं सुशीला कुमारी, पिता श्री रामविलास हरिजन, ग्राम दिग्घी, प्रखंड महागामा की रहने वाली हूँ। मेरी उम्र 20 वर्ष है। मैंने मैट्रिक व इंटर की परीक्षा राँची में इंटर स्तरीय विद्यालय से उत्तीर्ण की। उस दौरान मेरे पिताजी राँची में प्राईवेट नौकरी करते थे और मेरा पूरा परिवार राँची में ही रहा करता था। सब ठीक चल रहा था, इसी दौरान कोविड जैसी महामारी ने अपना पाँव पसारना शुरू कर दिया। पूरे सूबे में लॉकडाउन लगाया गया। जिसके कारण हमलोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। पिताजी की नौकरी चली गई और हमारे परिवार की स्थिति काफी खराब हो गई। आय का कोई दूसरा साधन नजर नहीं आ रहा था। इस वजह से हमारे पूरे परिवार को गाँव की ओर पलायन करना पड़ा। पिताजी ने अपनी जमा पूँजी से गाँव में एक दुकान खोल ली। इससे परिवार का गुजारा तो होने लगा, लेकिन मेरी पढ़ाई रुक गई। इंटर के बाद मुझे बी.ए. में दाखिला लेना था, लेकिन पिताजी ने मुझे आगे पढ़ा पाने में असमर्थता जाहिर की। और इसी बीच मेरी शादी की चर्चा शुरू हो गई। मैं काफी तनाव में रहने लगी। मेरा सपना था कि मैं पढ़–लिखकर नर्स या शिक्षिका बनूं, लेकिन अब यह मुश्किल लगा। तभी मैंने अपने गाँव में चल रहे उमंग सत्रों में जाना शुरू किया, जहाँ उमंग दीदी से मुझे कई जानकारियां मिलीं। जब दीदी से जान पहचान बढ़ी, तो मैंने दीदी को अपनी समस्या बताई। इसके बाद मैं दीदी को लेकर अपने घर गई और अपने माता–पिता से मिलवाया। दीदी ने बाल विवाह/जल्द विवाह के बारे में जानकारी देते हुए, सपने, आकांक्षा आदि के बारे में बातचीत की और साथ ही अपने सपने पूरे करने के लिए पढ़ाई जारी रखने के महत्व के बारे में भी चर्चा की।

पिताजी ने भी इस पर अपनी सहमति दे दी। इसके बाद मैं गाँव में ही बच्चों को ट्यूशन देने लगी। कुछ समय बाद मैंने ट्यूशन से जमा पैसे और पिताजी के सहयोग से बी.ए. में नामांकन करवा लिया। आज दो वर्ष के अंतराल के बाद मेरी पढ़ाई जारी है। इस दौरान मैने कभी हिम्मत नहीं हारी। हमारे हौसलों को बढ़ाने में उमंग का अमूल्य योगदान रहा।"

पी.सी.आई. की नई शुरुआत

स्कूल न केवल शिक्षा की नींव प्रदान करता है, जो बच्चों के उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए अति–महत्वपूर्ण है, बल्कि बालविवाह, बालश्रम, बालतस्करी जैसी सामाजिक बुराइयों से भी सुरक्षा प्रदान करता है। उमंग कार्यक्रम के तहत पी.सी.आई. का उद्देश्य है लड़कियों की कम से कम 10 साल की स्कूली शिक्षा सुनिश्चित कर बाल विवाह की घटनाओं को कम करना। जामताड़ा के नाला प्रखंड के 25 तथा गोड्डा के सदर प्रखंड की 24 बालिकाओं का विद्यालयों में पुनः नामांकन कर उमंग के इस उद्देश्य को साकार करने में महिला समूह की सदस्यों ने सक्रिय भूमिका निभाई है।

जे.एस.एल.पी.एस. कैडर, श्रीमती काकोली दास, जो नाला ब्लॉक के मुर्गबनी गांव में सक्रिय महिला के रूप में कार्यरत हैं, कहती हैं, ''जैसे ही हमने उमंग के तहत अपने गाँव में किशोर लड़कियों को सूचीबद्ध करना शुरू किया, मेरे गांव में 12 लड़कियों के बारे में पता चला जो स्कूल छोड़ चुकी थीं। मैंने मुर्गबनी आजीविका महिला संगठन की प्रतिनिधियों के साथ मिलकर लड़कियों और उनके माता–पिता को उन्हें स्कूल में फिर से प्रवेश दिलवाने के लिए परामर्श दिया। साथ ही और किसी भी प्रकार की सामाजिक और आर्थिक मदद के लिए पूर्ण समर्थन का आश्वासन भी दिया। इसके बाद हमने स्कूल में शिक्षकों से भी बातचीत की और इन सभी 12 लड़कियों का स्कूल में दोबारा नामांकन करवाया।''

काकोली का कहना है कि यह मेरे लिए अत्यधिक संतुष्टि और गर्व का विषय है कि मैं लड़कियों के जीवन को बेहतर बनाने में कुछ योगदान दे सकी, और लड़कियों में जीवन में कुछ करने की प्रेरणा दे पाती हूँ।

ग्राम संगठन, स्थानीय हितधारकों जैसे पंचायत सदस्य, शिक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता आदि के समर्थन के साथ, माता–पिता को जल्दी शादी के बजाय लड़कियों के लिए शिक्षा का विकल्प चुनने के लिए साथियों के प्रभाव और दबाव का उपयोग करते हैं। पचास किशोरियों का स्कूल में नामांकन सिर्फ एक शुरुआत है। अब तक 500 से अधिक ड्रॉपआउट लड़कियों की पहचान की गई है और उन्हें अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रेरित किया जाएगा ताकि वे बाल विवाह का शिकार न बनें।

किशोरी सशक्तीकरण में युवाओं एवं पुरुषों की सराहनीय पहल

किशोरी सशक्तीकरण के विभिन्न प्रयासों के फलस्वरूप हालांकि कुछ सफलता मिली है, परंतु अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश किशोरियों का जीवन अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। शिक्षा, विवाह एवं रोजगार जैसे प्रमुख मुद्दो पर किशोरियों की निर्णय लेने की क्षमता सीमित है। इसकी प्रमुख वजह पितृसत्तात्मक एवं पारम्परिक सोच है। इस सोच को बदलने और सकारात्मक बदलाव के लिए उमंग कार्यक्रम के अंतर्गत, पुरुषों एवं युवाओं द्वारा अपनी भूमिका का आत्म–अवलोकन, अपनी सोच एवं व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन, एवं किशोरी सशक्तीकरण के लिए पहल की जा रही है। गोड्डा एवं जामताड़ा जिले के 216 गाँवों में लगभग 16000 युवा एवं पुरुष, 15–20 सदस्यों के लगभग 683 ग्रुप बनाकर इस पहल से जुड़े हैं।

पिछले लगभग 6 महीनों में इन 683 समूहों ने अपने–अपने गाँवों में चर्चा एवं पंचायत स्तर पर युवाओं एवं पुरुषों के साथ एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त, किशोरियों का मनोबल बढ़ाने के लिए, किशोरियों के लिए खेल का मैदान उपलब्ध एवं समतल करवाना, फुटबॉल जैसे खेल का किशोरियों को प्रशिक्षण देना, खेलकूद का टूर्नामेंट आयोजित करना, सामाजिक मुद्दों पर चित्र प्रतियोगिता, 15 अगस्त, 26 जनवरी एवं 2 अक्टूबर जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर किशोरियों द्वारा ध्वजारोहण, एवं अपनी बात रखने का अवसर देना एक सार्थक पहल कही जा सकती है। युवाओं एवं पुरुषों की इस पहल का सकारात्मक असर कुछ हद तक दिखना शुरू हो गया है। जो किशोरियाँ फुटबॉल जैसे खेल खेलने में हिचकिचाती थीं, अब वे अपने गाँवों में किशोरियों का समूह बनाकर नियमित फुटबॉल खेल रही हैं। साथ ही जिला स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग ले रही हैं। प्रशिक्षण लेकर कुछ लड़कियां रोजगार के अवसरों से भी जुड़ रही हैं।

युवाओं एवं पुरुषों ने कार्यशाला एवं बैठकों के दौरान किशोरियों की शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण बनाने, किशोरियों को सशक्त बनाने, कम उम्र की लड़की से शादी न करने एवं बाल विवाह जैसी घटनाओं को रोकने की शपथ ली, जो कार्यक्रम के लिए उत्साहवर्धक परिणाम हैं।

पुरुष और युवाओं के साथ मीटिंग में इस्तेमाल किये जाने वाले बैनर

रोको हिंसा को
लड़कियों को नहीं
सुरक्षित बनाओ
जगहें सभी

इन्हीं कहानियों को नीचे दिए हुए लिंक के माध्यम से एनीमेशन में भी देख सकते हैं :

https://drive.google.com/drive/folders/1Urw8gNkKpkqplwrt0eDo0vLB3h31RVcw?usp=sharing

आभार

उमंग कार्यक्रम के समर्थन के लिए हम आईकीया (IKEA) फॉउण्डेशन के आभारी हैं।
इस पत्रिका की रचना और प्रसार में अपने स्थानीय भागीदारों – साथी (गोड्डा), प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल एवं बदलाव फॉउण्डेशन (जामताड़ा) – के सहयोग लिए हम उन्हें धन्यवाद देते हैं।
उमंग वाणी की कल्पना और लेखन में उमंग टीम के इन सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है – **आई.सी.आर.डब्लयू. –** डॉ. रवि वर्मा, अमाजित मुखर्जी, प्रणीता अच्युत, डॉ. नसरीन जमाल, राजेन्द्र सिंह, तन्वी झा, पारस वर्मा, नलिनी वी. खुराना, बिनीत झा, त्रिलोकी नाथ, शक्ति घोष, नित्या अग्रवाल, आकृति जयंत, **प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल –** अंकिता कशिश, नवाब परवेज, पूनम कुमारी, संजीव सिंह, अनीता कुमारी, शालिनी कुमारी, **साथी –** डॉ. नीरज कुमार, बिभाष झा, सुबोध माझी, **बदलाव फॉउण्डेशन –** अरविन्द कुमार, देबाशीष दास, पियाली पाल, रामरूप सिंह। **बांगला नाटक डॉट कॉम –** अनन्या भट्टाचार्य, निर्माल्य राय।

इस न्यूज़लेटर के बारे में जानकारी के लिए इन्हें संपर्क करें –

संपर्क व्यक्ति	संस्था का नाम	मोबाइल नंबर
डॉ. नसरीन जमाल	आई.सी.आर.डब्लयू.	9431391359
सुश्मिता मुखर्जी	पी. सी. आई.	8920132942
डॉ. नीरज कुमार	साथी	7004905488
अरविन्द कुमार	बदलाव फॉउण्डेशन	8210932507

ICRW INTERNATIONAL CENTER FOR RESEARCH ON WOMEN PASSION. PROOF. POWER.
SATHEE साथी
BADLAO FOUNDATION INITIATIVE FOR CHANGE
PCI A Global Communities Partner
banglanatak.com CONTACT BASE

ICRW Ranchi Office:
405, 4th Floor, Krishna Mall, Ashok Nagar,
Between Road No. 1&2, Opposite Central GST Office,
Ranchi - Jharkhand - 834002
Tel. - 0651-2244416/2244417

ICRW Asia Regional Office:
C-59, South Ext. Part II, New Delhi-110049
Tel. : 91-11-4664.3333 ,
Fax : 91-11-2463.5142
Email : Info.india@icrw.org

Design By:
Inzenius Consultancy Services Pvt. Ltd./2022/01